



Mr.

25 May 1998

06:07 AM

Indore

Model: Web-MyKundli

Order No: 119689201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 25/05/1998
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 06:07:00 घंटे
इष्ट _____: 01:00:22 घटी
स्थान _____: Indore
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:40:36 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:08 घंटे
साम्पातिक काल _____: 21:50:13 घंटे
सूर्योदय _____: 05:42:51 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:03:59 घंटे
दिनमान _____: 13:21:09 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 09:47:43 वृष
लग्न के अंश _____: 15:03:06 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: अ-आकांक्षा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
 पिता का नाम _____:
 माता का नाम _____:
 जाति _____:
 गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	ज्येष्ठ	4
पंजाबी	संवत : 2055	ज्येष्ठ	12
बंगाली	सन् : 1405	ज्येष्ठ	10
तमिल	संवत : 2055	वैकासी	11
केरल	कोल्लम : 1173	इदवम	11
नेपाली	संवत : 2055	ज्येष्ठ	11
चैत्रादि	संवत : 2055	ज्येष्ठ	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2055	वैशाख	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 15
 तिथि समाप्ति काल _____: 25:02:13
 जन्म तिथि _____: 15
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:08:18 घंटे
 जन्म योग _____: कृतिका
 सूर्योदय कालीन योग _____: अतिगण्ड
 योग समाप्ति काल _____: 23:20:59 घंटे
 जन्म योग _____: अतिगण्ड
 सूर्योदय कालीन करण _____: चतुष्पाद
 करण समाप्ति काल _____: 14:37:55 घंटे
 जन्म करण _____: चतुष्पाद
 भयात _____: 08:50:23
 भोग _____: 53:53:37
 भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 0 मा 4 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
 तिथि _____: 1-6-11
 दिन _____: रविवार
 नक्षत्र _____: मघा
 योग _____: विष्कुम्भ
 करण _____: बव
 प्रहर _____: 1
 वर्ग _____: सर्प
 लग्न _____: मेष
 सूर्य _____: कर्क
 चन्द्र _____: मेष
 मंगल _____: सिंह
 बुध _____: वृष
 गुरु _____: कन्या
 शुक्र _____: तुला
 शनि _____: मिथुन
 राहु _____: वृश्चिक

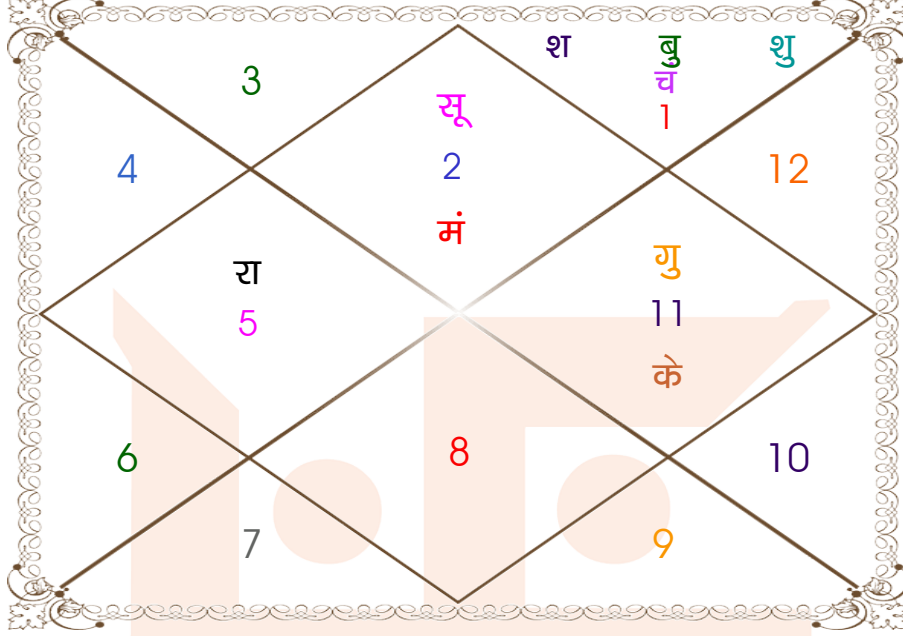


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

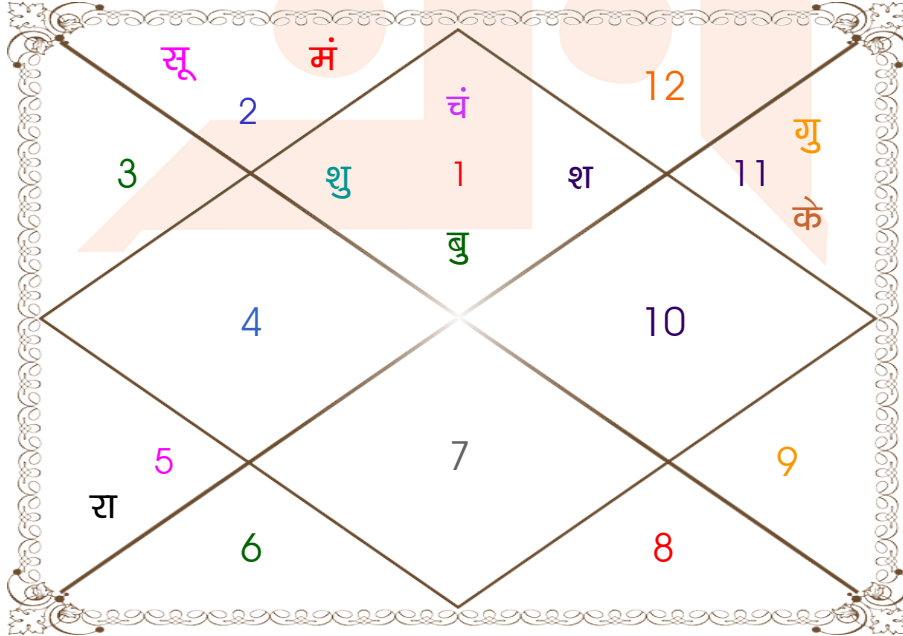


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	शु च बु श	मं ल सू	
के गु			
			रा

लग्न कुण्डली

मं सू	चं बु	के गु
ल	शु श	
रा		

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 0मा 4दि
सूर्य

25/05/1998

30/05/2117

सूर्य	30/05/2003
चन्द्र	29/05/2013
मंगल	29/05/2020
राहु	29/05/2038
गुरु	29/05/2054
शनि	29/05/2073
बुध	29/05/2090
केतु	29/05/2097
शुक्र	30/05/2117

योगिनी
उल्का 5वर्ष 0मा 4दि
भामरी

29/05/2024

29/05/2028

भामरी	07/11/2024
भद्रिका	29/05/2025
उल्का	28/01/2026
सिद्धा	08/11/2026
संकटा	28/09/2027
मंगला	08/11/2027
पिंगला	28/01/2028
धान्या	29/05/2028



FUTUREPOINT
Astro Solutions



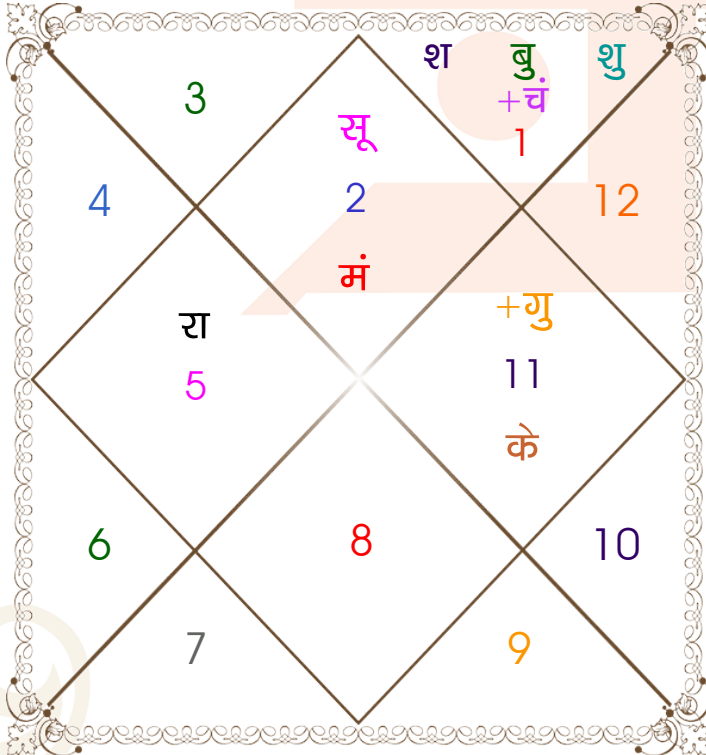
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	15:03:06	364:58:59	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	---
सूर्य			वृष	09:47:43	00:57:40	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	28:51:41	14:53:22	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	सम राशि
मंगल		अ	वृष	06:47:17	00:42:41	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	बुध	सम राशि
बुध			मेष	22:07:44	01:47:22	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
गुरु			कुंभ	29:51:43	00:09:02	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	सम राशि
शुक्र			मेष	00:25:04	01:09:28	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	सम राशि
शनि			मेष	04:33:54	00:06:41	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	नीच राशि
राहु	व		सिंह	12:27:38	00:10:45	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	12:27:38	00:10:45	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	18:53:18	00:00:22	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप	व		मक	08:13:07	00:00:39	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो	व		वृश्चि	12:56:59	00:01:38	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			कुंभ	01:26:33	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	बुध	--

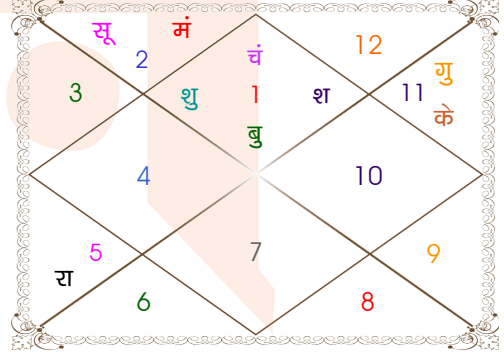
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:56

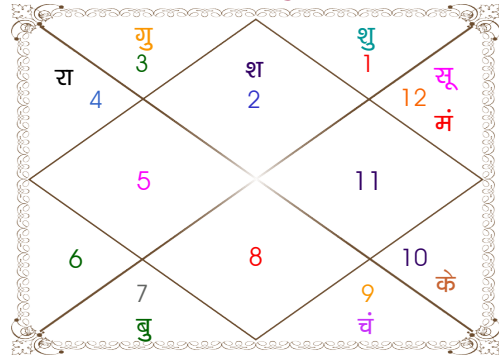
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 27:47:01	वृष 15:03:06
2	वृष 27:47:01	मिथुन 10:30:55
3	मिथुन 23:14:50	कर्क 05:58:44
4	कर्क 18:42:38	सिंह 01:26:33
5	सिंह 18:42:38	कन्या 05:58:44
6	कन्या 23:14:50	तुला 10:30:55
7	तुला 27:47:01	वृश्चिक 15:03:06
8	वृश्चिक 27:47:01	धनु 10:30:55
9	धनु 23:14:50	मकर 05:58:44
10	मकर 18:42:38	कुम्भ 01:26:33
11	कुम्भ 18:42:38	मीन 05:58:44
12	मीन 23:14:50	मेष 10:30:55

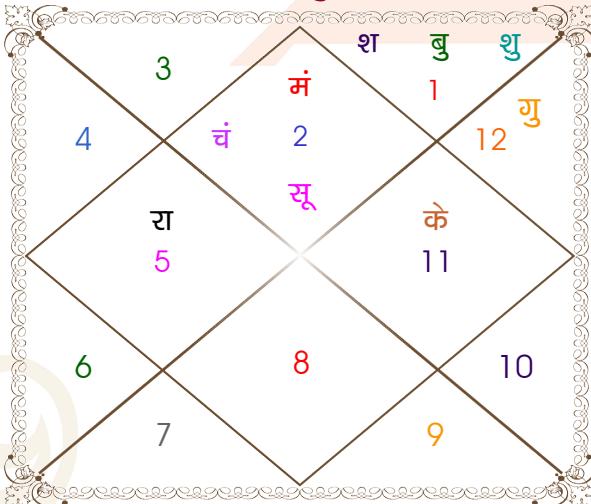
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	15:03:06
2	मिथुन	10:17:32
3	कर्क	04:35:52
4	सिंह	01:26:33
5	कन्या	03:19:27
6	तुला	09:31:50
7	वृश्चिक	15:03:06
8	धनु	10:17:32
9	मकर	04:35:52
10	कुम्भ	01:26:33
11	मीन	03:19:27
12	मेष	09:31:50

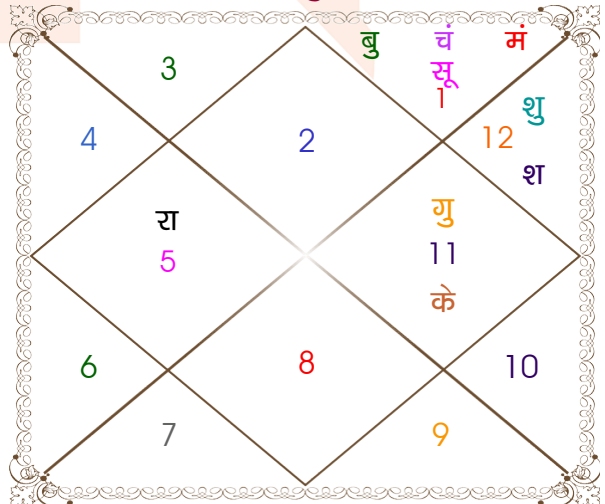
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 0 मास 4 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
25/05/1998	30/05/2003	29/05/2013	29/05/2020	29/05/2038
30/05/2003	29/05/2013	29/05/2020	29/05/2038	29/05/2054
00/00/0000	चंद्र 29/03/2004	मंगल 25/10/2013	राहु 09/02/2023	गुरु 16/07/2040
25/05/1998	मंगल 28/10/2004	राहु 13/11/2014	गुरु 05/07/2025	शनि 28/01/2043
मंगल 23/07/1998	राहु 29/04/2006	गुरु 20/10/2015	शनि 11/05/2028	बुध 05/05/2045
राहु 17/06/1999	गुरु 29/08/2007	शनि 27/11/2016	बुध 28/11/2030	केतु 11/04/2046
गुरु 04/04/2000	शनि 29/03/2009	बुध 25/11/2017	केतु 16/12/2031	शुक्र 10/12/2048
शनि 17/03/2001	बुध 29/08/2010	केतु 23/04/2018	शुक्र 16/12/2034	सूर्य 28/09/2049
बुध 21/01/2002	केतु 30/03/2011	शुक्र 23/06/2019	सूर्य 10/11/2035	चंद्र 28/01/2051
केतु 29/05/2002	शुक्र 27/11/2012	सूर्य 29/10/2019	चंद्र 11/05/2037	मंगल 04/01/2052
शुक्र 30/05/2003	सूर्य 29/05/2013	चंद्र 29/05/2020	मंगल 29/05/2038	राहु 29/05/2054
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
29/05/2054	29/05/2073	29/05/2090	29/05/2097	30/05/2117
29/05/2073	29/05/2090	29/05/2097	30/05/2117	00/00/0000
शनि 01/06/2057	बुध 26/10/2075	केतु 25/10/2090	शुक्र 29/09/2100	सूर्य 17/09/2117
बुध 09/02/2060	केतु 22/10/2076	शुक्र 26/12/2091	सूर्य 29/09/2101	चंद्र 18/03/2118
केतु 20/03/2061	शुक्र 23/08/2079	सूर्य 01/05/2092	चंद्र 31/05/2103	मंगल 26/05/2118
शुक्र 20/05/2064	सूर्य 28/06/2080	चंद्र 30/11/2092	मंगल 30/07/2104	00/00/0000
सूर्य 02/05/2065	चंद्र 28/11/2081	मंगल 29/04/2093	राहु 30/07/2107	00/00/0000
चंद्र 01/12/2066	मंगल 25/11/2082	राहु 17/05/2094	गुरु 30/03/2110	00/00/0000
मंगल 10/01/2068	राहु 13/06/2085	गुरु 23/04/2095	शनि 30/05/2113	00/00/0000
राहु 16/11/2070	गुरु 19/09/2087	शनि 01/06/2096	बुध 30/03/2116	00/00/0000
गुरु 29/05/2073	शनि 29/05/2090	बुध 29/05/2097	केतु 30/05/2117	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 0 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि 05/07/2025 11/05/2028	राहु - बुध 11/05/2028 28/11/2030	राहु - केतु 28/11/2030 16/12/2031	राहु - शुक्र 16/12/2031 16/12/2034	राहु - सूर्य 16/12/2034 10/11/2035
शनि 16/12/2025 बुध 13/05/2026 केतु 13/07/2026 शुक्र 02/01/2027 सूर्य 23/02/2027 चंद्र 21/05/2027 मंगल 21/07/2027 राहु 24/12/2027 गुरु 11/05/2028	बुध 19/09/2028 केतु 13/11/2028 शुक्र 17/04/2029 सूर्य 03/06/2029 चंद्र 19/08/2029 मंगल 13/10/2029 राहु 01/03/2030 गुरु 03/07/2030 शनि 28/11/2030	केतु 20/12/2030 शुक्र 22/02/2031 सूर्य 13/03/2031 चंद्र 14/04/2031 मंगल 07/05/2031 राहु 03/07/2031 गुरु 23/08/2031 शनि 23/10/2031 बुध 16/12/2031	शुक्र 16/06/2032 सूर्य 10/08/2032 चंद्र 09/11/2032 मंगल 12/01/2033 राहु 25/06/2033 गुरु 19/11/2033 शनि 11/05/2034 बुध 13/10/2034 केतु 16/12/2034	सूर्य 02/01/2035 चंद्र 29/01/2035 मंगल 17/02/2035 राहु 07/04/2035 गुरु 21/05/2035 शनि 12/07/2035 बुध 28/08/2035 केतु 16/09/2035 शुक्र 10/11/2035
राहु - चंद्र 10/11/2035 11/05/2037	राहु - मंगल 11/05/2037 29/05/2038	गुरु - गुरु 29/05/2038 16/07/2040	गुरु - शनि 16/07/2040 28/01/2043	गुरु - बुध 28/01/2043 05/05/2045
चंद्र 26/12/2035 मंगल 27/01/2036 राहु 18/04/2036 गुरु 30/06/2036 शनि 24/09/2036 बुध 11/12/2036 केतु 12/01/2037 शुक्र 13/04/2037 सूर्य 11/05/2037	मंगल 02/06/2037 राहु 30/07/2037 गुरु 19/09/2037 शनि 19/11/2037 बुध 12/01/2038 केतु 03/02/2038 शुक्र 08/04/2038 सूर्य 27/04/2038 चंद्र 29/05/2038	गुरु 10/09/2038 शनि 12/01/2039 बुध 02/05/2039 केतु 16/06/2039 शुक्र 24/10/2039 सूर्य 02/12/2039 चंद्र 05/02/2040 मंगल 22/03/2040 राहु 16/07/2040	शनि 10/12/2040 बुध 20/04/2041 केतु 13/06/2041 शुक्र 14/11/2041 सूर्य 31/12/2041 चंद्र 18/03/2042 मंगल 11/05/2042 राहु 26/09/2042 गुरु 28/01/2043	बुध 25/05/2043 केतु 12/07/2043 शुक्र 27/11/2043 सूर्य 08/01/2044 चंद्र 17/03/2044 मंगल 04/05/2044 राहु 05/09/2044 गुरु 25/12/2044 शनि 05/05/2045
गुरु - केतु 05/05/2045 11/04/2046	गुरु - शुक्र 11/04/2046 10/12/2048	गुरु - सूर्य 10/12/2048 28/09/2049	गुरु - चंद्र 28/09/2049 28/01/2051	गुरु - मंगल 28/01/2051 04/01/2052
केतु 25/05/2045 शुक्र 20/07/2045 सूर्य 06/08/2045 चंद्र 04/09/2045 मंगल 24/09/2045 राहु 14/11/2045 गुरु 29/12/2045 शनि 21/02/2046 बुध 11/04/2046	शुक्र 20/09/2046 सूर्य 08/11/2046 चंद्र 28/01/2047 मंगल 26/03/2047 राहु 19/08/2047 गुरु 27/12/2047 शनि 29/05/2048 बुध 14/10/2048 केतु 10/12/2048	सूर्य 24/12/2048 चंद्र 18/01/2049 मंगल 04/02/2049 राहु 19/03/2049 गुरु 27/04/2049 शनि 13/06/2049 बुध 24/07/2049 केतु 10/08/2049 शुक्र 28/09/2049	चंद्र 07/11/2049 मंगल 06/12/2049 राहु 17/02/2050 गुरु 23/04/2050 शनि 09/07/2050 बुध 16/09/2050 केतु 14/10/2050 शुक्र 03/01/2051 सूर्य 28/01/2051	मंगल 17/02/2051 राहु 09/04/2051 गुरु 24/05/2051 शनि 17/07/2051 बुध 04/09/2051 केतु 23/09/2051 शुक्र 19/11/2051 सूर्य 06/12/2051 चंद्र 04/01/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	3
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



FUTUREPOINT
Astro Solutions

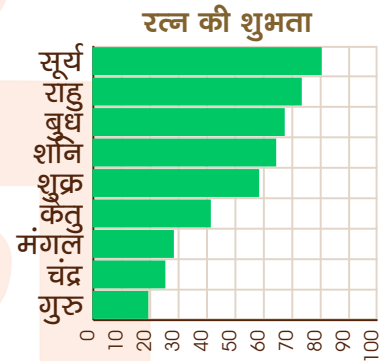


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	80%	स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	73%	सुख, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	67%	कम खर्च, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	64%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	58%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	41%	व्यावसायिक हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	28%	रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	25%	व्यय, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	19%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	30/05/2003	92%	38%	41%	67%	31%	41%	52%	61%	16%
चंद्र	29/05/2013	86%	50%	28%	73%	19%	58%	64%	61%	16%
मंगल	29/05/2020	86%	38%	52%	55%	31%	58%	64%	61%	52%
राहु	29/05/2038	67%	0%	3%	67%	19%	64%	70%	86%	16%
गुरु	29/05/2054	86%	38%	41%	55%	44%	41%	64%	73%	41%
शनि	29/05/2073	67%	0%	3%	73%	19%	64%	77%	80%	16%
बुध	29/05/2090	86%	0%	28%	80%	19%	64%	64%	73%	41%
केतु	29/05/2097	67%	0%	41%	67%	19%	64%	52%	61%	58%
शुक्र	30/05/2117	67%	0%	28%	73%	19%	70%	70%	80%	52%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/05/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

अशुभ
शुभ
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

व्यय
स्वास्थ्य
पराक्रम हानि
दाम्पत्य कलह
धनार्जन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परन्तु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को विद्याध्ययन में कष्ट उठाना पड़ता है। अत्यधिक संघर्ष करने पर ही विशेष सफलता हासिल होती है। घर-द्वार चल-अचल, जमीन-जायदाद सम्बन्धी वस्तुओं पर विघ्न बाधाएं आती रहती हैं और वैवाहिक जीवन में सुख का अभाव रहता है। पति-पत्नी आपस में तनावग्रस्त रहते हैं। जातक को माता-पिता से समय-समय पर कष्ट झेलना पड़ता है। नौकर चाकर, गाड़ी-सवारी आदि से भी तकलीफ उठानी पड़ती है। घर में सुख-शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण मानसिक परेशानी तथा बेवजह चिन्ता घेरे रहती है और जातक इसके कारण चिड़चिड़ा हो जाता है।

इस योग के कारण जातक एक साथ अनेक कामों को करने का प्रयास करता है, जिसमें विभिन्न तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। परिणामस्वरूप कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है। जातक किसी पर भी भरोसा कर लेता है। परन्तु वे लोग समय पर विश्वासघात करते हैं। फलस्वरूप उनसे अनेक प्रकार की क्षति मिलती है। व्यापार व्यवसाय में नुकसान की सम्भावना बनी रहती है। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में समय से सफलता मिलती है। सामाजिक मान सम्मान का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। इस योग के कारण घर-द्वार जमीन-जायदाद चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर अनेक प्रकार की विघ्न बाधाएँ आती रहती हैं और जातक को सुख का अभाव रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000 (अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला

सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी

आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(29/05/2020 - 29/05/2038)

राहु की महादशा 29/05/2020 को आरम्भ होकर 29/05/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्वरूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(09/02/2023 - 05/07/2025)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/05/2020 को प्रारंभ होकर 29/05/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 09/02/2023 को प्रारंभ होकर 05/07/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 2, 4, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धनी बनेंगे, धर्म में आस्था होगी। किसी धार्मिक संस्था से संबद्ध हो सकते हैं। धर्मगुरुओं की सहायता करेंगे। विचार और कार्यों में पवित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि
(05/07/2025 - 11/05/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 29/05/2020 को प्रारंभ होकर 29/05/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 05/07/2025 को प्रारंभ होकर 11/05/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है, शुभफल अवश्य मिलता है, मगर कुछ देरी से।

इस अवधि में आपका मष्तिष्क सुस्त हो सकता है। धन की हानि हो सकती है। व्यापार में तनाव हो सकता है। निराश रह सकते हैं। गुप्त रूप से पापकर्म में लिप्त रह सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(11/05/2028 - 28/11/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/05/2020 को प्रारंभ होकर 29/05/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 11/05/2028 को प्रारंभ होकर 28/11/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दर्शनिक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, बुद्धि भ्रष्ट हो सकती है। चिंतित और भ्रमित रह सकते हैं। विवाहेतर यौन संबंध हो सकते हैं। मस्तिष्क का सकारात्मक उपयोग करना उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।